दिनांक
02/09/2020

हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध

वैनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)

पत्र संख्या :- X

कामायनी (जयशंकर प्रसाद)

प्रश्न :- कामायनी में दार्शनिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डालें ?

उत्तर :- कामायनी आधुनिक हिन्दी का सर्वाधिक देदीप्यमान महाकाव्य है। इस महाकाव्य का दार्शनिक आधार अत्यन्त पुष्ट एवं प्रौढ़ है। शैव दर्शन और भारतीय दर्शनों से महत्वपूर्ण, उपयोगी और वांछनीय है तत्वों का चयन कर प्रसाद जी ने कामायनी के दार्शनिक आधार का निरूपण किया है। कामायनी के दार्शनिक सिद्धान्तों का हम निम्न विचार बिन्दुओं के अन्तर्गत अध्ययन कर सकते हैं :-

1. समरसता का सिद्धान्त
2. आनंदवाद
3. नियतिवाद
4. प्रत्यभिज्ञा दर्शन
5. अन्य दर्शनों का प्रभाव

समरसता का अर्थ है, द्वैध का अभाव। दो को मिलाकर एक हो जाना ही समरसता है। यह शब्द मूलतः प्रत्यभिज्ञा दर्शन से सम्बन्ध रखता है। प्रसाद जी ने समरसता की एक मात्र सूत्रधारिणी श्रद्धा को बताया है और समरसता द्वारा जीवन के नाना वैषम्यों और जटिलताओं के निराकरण का प्रयास किया है। कामायनी में अनेक प्रकार की समरसता का विवेचन है। हृदय और बुद्धि का समन्वय, इच्छा, क्रिया और ज्ञान का समन्वय, सुख-दुःख का समन्वय, नर-नारी का समन्वय, अधिकार और अधिकारी का समन्वय आदि कामायनी में वर्णित है। दुःख-सुख के मध्य समरसता की स्थापना इन पंक्तियों द्वारा हुई है :-

"नित्य समरसता का अधिकार,
उमड़ता कारण जलधि समान।

उषा से नीली लहरों बीच,
बिखरते सुख मणिगण द्युतिमान।"

नर-नारी तथा अधिकारी अधिकृत के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए प्रसाद जी ने कामायनी में निम्न पँक्तियाँ लिखी हैं:-

"तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की
समरसता है सम्बन्ध बनी अधिकार और अधिकारी की।"

समरसता के समाधान द्वारा जिस सत्त्व की प्राप्ति होती है वह आनंद है। यह आनंदवाद ही कामायनी का मूल प्रतिपाद्य है। कामायनी में आनंद के जिस रूप की प्रतिष्ठा है, वह स्पष्टत: आत्मस्थ है। वह अन्तर्मुख आनंद या आत्मानन्द है - बाह्य, गोचर विश्वरूप में प्रसारित आनंद नहीं है। इस अखंड आनन्दानुभूति में द्वयता के लिए स्थान नहीं है, दु:ख और सुख तथा जड़ और चेतन के द्वैत भाव इसमें तिरोहित हो जाते हैं:-

"सब भेदभाव भुलवाकर,
दु:ख-सुख को दृश्य बनाता;
मानव कह रे! 'यह मैं हूँ'
यह विश्व नीड़ बन जाता।"

प्रसाद जी के आनंदवाद में श्रद्धा का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वही मनु को अखंड आनंद की प्राप्ति कराती है। मनु जब तक इड़ा अथवा बुद्धि के प्रभाव में रहते हैं तब तक वास्तविक सुख और आनंद की उपलब्धि उन्हें नहीं होती।

कामायनी में प्रतिपादित आनंद की साधना का मूल तत्व श्रद्धा है और समरसता उसका साधन है। प्रसाद जी के लिए आनंद प्राप्ति की अवस्था प्रपंचातीत या विषयातीत अवस्था है। इनके लिए आनंद ही योग है, आनंद ही मोक्ष तथा आनंद

ही ब्रह्म है। कामायनी में आनंदवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर प्रसाद जी ने आज के बुद्धिवादी मानव का पथ-प्रदर्शन किया है और उसे यह बताया है कि श्रद्धा रहित बुद्धि का अतिरेक व्यक्ति को अशांति, संघर्ष, वैमनस्य आदि ही प्रदान करता है। अखण्ड आनंद की प्राप्ति श्रद्धामूलक आनंदवाद से ही हो सकती है।

कामायनी में वर्णित नियतिवाद भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कामायनी में नियतिवाद को विश्व के सब प्रकार के कर्मचक्रों की संचालिका कहा गया है - "नियति-चलाती कर्मचक्र यह,
तृष्णा जनित ममत्व वासना।"

नियति के अनुशासन से व्यक्ति के मानसिक परिवर्तन होते हैं तथा बाह्य क्षेत्रों में भी नियति की आज्ञा से परिवर्तन हुआ करते हैं।

कामायनी में शैवागम और प्रत्यभिज्ञा-दर्शन के सिद्धान्तों की छाया भी दिखाई पड़ती है। डॉ० शंभुनाथ सिंह के अनुसार "प्रत्यभिज्ञा-दर्शन से उन्होंने मुख्यतः चार बातें ग्रहण की हैं।" 1. शिव-तत्व, 2. शक्तितत्व, और ज्ञान-इच्छा क्रिया की शक्तियाँ, 3. पंचकंचुक और मन-बुद्धि-अहंकार का सिद्धान्त, 4. समरसता और चिदानन्द लाभ का सिद्धान्त। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि कामायनी की दार्शनिक विचारधारा पर शैवागम और प्रत्यभिज्ञा-दर्शन का गहरा प्रभाव है परन्तु यह प्रभाव कामायनी की काव्यात्मकता में इस प्रकार समाहित हो गया कि दर्शन पूर्णतः अनभिज्ञ पाठक भी उसके रसास्वादन में समर्थ है।

अन्य दर्शनों का प्रभाव :- कामायनी के दर्शन में केवल प्रत्यभिज्ञा - दर्शन की ही छाया नहीं है, अपितु शैव दर्शन के अतिरिक्त उपनिषद्- वेदान्त, बौद्ध-दर्शन आदि का भी प्रभाव है। शैव दर्शन सामाजिक दर्शन न होकर व्यष्टि दर्शन है। इसके विपरित कामायनी का दर्शन सामाजिक दर्शन है जो कि व्यक्ति के विकास से सन्तुष्ट न रहकर सम्पूर्ण समाज के विकास की कामना करता है। अन्तिम सर्ग की अन्तिम पंक्तियाँ भी समष्टिगत कल्याण की पुकार कर रही है-

'शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय,
समन्वय उनका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय।"

कामायनी की दार्शनिक विचार धारा पर बौद्ध-दर्शन के दुःखवाद का भी प्रभाव पड़ा है किन्तु बौद्धों की भांति प्रसाद जी ने केवल दुःखवाद का ही वर्णन नहीं किया। वे मूलतः आनंदवादी थे और दुःख की उन्होंने छाया भाव वर्णित की है। इस प्रकार कामायनी सूक्ष्म मनोवैज्ञानिकता का मानव महाकाव्य है।

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो०नं०- 8292271041
ईमेल :- benamkumar15@gmail.com

दिनांक
02/09/2020